कंप्यूटेशनल लिंग्विस्टिक्स विभागमें नवीन एवं रोजगार परक पाठ्यक्रम प्रारंभ

नैक द्वारा 'ए' ग्रेड प्राप्त महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा के भाषा विद्यापीठ के अंतर्गत स्थापित कंप्यूटेशनल लिंग्विस्टिक्स विभाग देश का एक अनूठा विभाग है जोकि कंप्यूटेशनल लिंग्विस्टिक्स तथा प्रौद्योगिकी के

विभिन्न पाठ्यक्रमों को पूर्णत: हिंदी माध्यम से सन 2008 से निरंतर संचालित कर रहा है। प्राकृतिक भाषा का कंप्यूटर टेक्नॉलॉजी माध्यम द्वारा मानवहित में नवीन एप्लिकेशन सॉफ़्टवेयर निर्माण एवं अध्ययन कार्य संगणकीय भाषाविज्ञान अर्थात कंप्यूटेशनल लिंग्विस्टिक्स है। संगणकीय भाषाविज्ञान, भाषा प्रौद्योगिकी का एक विशिष्ट एवं अनिवार्य अंग होते हुए प्रौद्योगिकी के अन्य आयामों जैसे कि स्पीच टेक्नॉलॉजी, डिजिटल सिग्नल प्रोसेसिंग, इमेज प्रोसेसिंग इत्यादि से परिपूर्ण है। कंप्यूटेशनल लिंग्विस्टिक्स के प्रभारी विभागाध्यक्ष एवं प्रौद्योगिकी अध्ययन केंद्र के प्रभारी निदेशक जगदीप सिंह दांगी ने एक विशेष बातचीत में बताया कि कुछ पाठ्यक्रम इसमें पहले से ही चलाए जा रहे हैं। इसमें एमए (कंप्यूटेशनल लिंग्विस्टिक्स), एमफिल (कंप्यूटेशनल लिंग्विस्टिक्स), पीएचडी(कंप्यूटेशनल लिंग्विस्टिक्स) प्रमुख हैं तथा प्रौद्योगिकी अध्ययन केंद्र के अंतर्गत संचालित पाठ्यक्रम यथा मास्टर ऑफ इन्फॉरमेटिक्स एंड लैंग्वेज

इंजीनियरिंग, पीएचडी (मास्टर ऑफ इन्फॉरमेटिक्स एंड लैंग्वेज इंजीनियरिंग) तथा डिप्लोमा पाठ्यक्रम में डीसीए प्रमुख है। विवि के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने हिंदी और कंप्यूटर तकनीकी को वर्तमान समय की एक अहम जरूरत बताते हुए इस वर्ष कंप्यूटेशनल लिंग्विस्टिक्स विभाग को एक नवीन सौगात पीजीडीसीए पाठ्यक्रम प्रारंभ करा के दी है। आज विभिन्न सरकारी और गैर सरकारी नौकरियों में कंप्यूटर शिक्षा को महत्व दिया जाता है और कई जॉब्स में आवेदन के लिए पीजीडीसीए माँगा जाता है। विभाग के अंतर्गत संचालित सभी पाठ्यक्रम चॉइस बेस्ड क्रेडिट सिस्टम (सीबीसीएस) आधारित होते हुए पूर्णत: अप्डैटिड और जॉब ऑरीएन्टिड हैं। विभाग भाषा तकनीकी और कंप्यूटर के प्रायोगिक ज्ञान हेतु आधुनिक प्रयोगशाला और आईसीटी कक्षाओं से परिपूर्ण है। पाठ्यक्रम में प्रवेश प्रक्रिया प्रारंभ है आवेदन करने की अंतिम तिथि 31 मई है।